बुक्सा

बोक्सा UK के तराई-भावर क्षेत्र में स्थित U.S. Nagar के बाजपुर, गदरपुर व काशीपुर, नैनीताल के रामनगर, पौढ़ी के दुगड्डा तथा देहरादून के विकास नगर, डोईवाला व सहसपुर के 173 ग्रामो में निवास करते है।

नैनीताल व U.S. Nagar जिलो के बोक्सा बहुल क्षेत्र को 'बुक्साड़' कहा जाता है।

बोक्सा स्वयं को पंवार राजपूत बताते है

बोक्सा सर्वप्रथम बनबसा (चम्पावत) आकर बसे थे

भावरी, कुमय्याँ व रचभैंसी इनकी भाषाएं है

बोक्सा हिन्दू धर्म के काफी निकट माने जाते है

ये लोग महादेव, काली, दुर्गा, लक्ष्मी, राम, कृष्ण की पूजा करते है

इसके अलावा - ग्राम खेड़ी देवी, साकरिया देवता, ज्वाल्पा, हुल्का, चौमुंडा देवी आदि की पूजा करते है।

काशीपुर में चौमुंडा देवी इस क्षेत्र के बोक्साओ की सबसे बड़ी देवी मानी जाती है।

* बुक्सा कल्पित आत्माओ (बुग्गा) की पूजा करते है।

चैती, नौबी, होली, दीपावली, नवरात्र के अलावा होगण, ढल्या, गोटरे व मौरो आदि भी इनके प्रमुख त्यौहार है।

बोक्साओ में कई परिवार मिलकर एक बोक्सा गांव (भीजरा) का निर्माण होता है

इनमे बिरादरी पंचायत तथा उसके नीचे एक मुंसिफ, एक दरोगा और दो सिपाही होते है।

जादू टोना तथा तंत्र-मंत्र के ज्ञाता व्यक्ति को भरारे कहते

देहरादून की बोक्सा को महर बोक्सा कहते है।

तरतजा, तुनवार, राजवंशी उपजातियाँ

बैठान विवाह प्रचलित है

थारू

प्रमुखतः ये U.S. Nagar के खटीमा किच्छा नानकमत्ता और सितारगंज के 14। गाँवो में निवास करते है
थारू स्वयं को किरात वंशीय मानते है और राणाप्रताप का वंशज भी
भाषा – अवधि मिश्रित पहाड़ी, नेपाली गावरी आदि भाषा बोलते है
इनके गाँव को पुरब कहते है
इनका मुख्य भोजन चावल और मछली
तम्बाकू व मदिरा इनका मुख्य पेय है। चावल से निर्मित शराब को 'जाउ' कहते है।
बड़वायक इनकी सबसे उच्च जाति है
पहले इनमे बदला प्रथा प्रचलित थी लेकिन अब तीनटिकठी व अन्य प्रथाएँ प्रचलित है
विवाह तय कर लिए जाने को पक्की पोढ़ी
विवाह की सगाई रस्म 'जपना-पराया'
विवाह की तिथि पक्की करने को बात कही
विधवा विवाह का भोज – लठभरवा भोज
थारुओ का समाज मातृसत्तात्मक है। इनमे महिलाओ को पुरुषो के अपेक्षा उच्च स्थान प्राप्त है। सयुक्त व एकाकी प्रथा का प्रचलन है।
धर्म – थारु हिन्दु धर्म को मानते है। पहावन खड्गाभूत काली नगरयाई देवी भूमिया (बड़ा बाबा) कोरोदेव राकत कलवा इनके प्रमुख देवी-देवता है।
थारु स्त्रियो का प्रमुख त्यौहार बजहर
थारु के गोत्र या घराने को – कुरी कहते है
यह मंगोल प्रजाति के निकट
* दिखनौरी प्रथा प्रचलित